५. चार हाथ चाँदना

(पठनार्थ)

–अमृता प्रीतम

(पंजाब के प्रसिद्‌ध चित्रकार श्री शोभा सिंह से प्रसिद्‌ध साहित्यकार अमृता प्रीतम की बातचीत)

अमृता प्रीतम : शोभा सिंह जी ! चित्रकला में तकनीकी और रूहानी पहलू से जितना अनुभव आपका है– वर्षों के हिसाब से भी और चिंतन की गहराई के हिसाब से भी उतना इस समय हमारे और किसी कलाकार का नहीं है । कलाकार के कर्म की व्याख्या करनी हो तो आप किन शब्दों में करेंगे ?

शोभा सिंह : सबसे पहले सत्यम शिवम और सुंदरम का क्रम बदलना होगा । मैं इसे सुंदरम, शिवम और सत्यम का क्रम देता हूँ। सुंदरता के लिए नजर सबसे पहली अवस्था है और सत्य उसकी तीसरी अवस्था । यह विकास की क्रिया है– जिसकी पहली मंजिल सुंदरता की कल्पना है । उसी कल्पना को जिसे आप अक्षरों के माध्यम से कागज पर उतारती हैं... चित्रकार रंगों और लकीरों के माध्यम से कैनवस पर उतारता है ।

अमृता प्रीतम : चित्रकला का माध्यम आपने कैसे चुना ?

शोभा सिंह : इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए मैंने कई बार एकांत में बैठकर अपनी आयु के सब वर्षों को टटोला है, वर्षों की निचली तहों को भी । मुझे लगता है कि लोगों को भी यह पक्का भुलावा हो गया है कि मैं चित्रकार हूँ और मैं खुद भी अपने आपको यही भुलावा-सा देता हूँ । इस भुलावे की बुनियाद एक घर था जिसकी मुझे जन्म से तलाश थी । मुझे याद है, मैं मुश्किल से कोई आठ बरस का रहा हूँगा, जब आँगन की रसोई पर जो परछत्ती बनी हुई थी, मुश्किल से साढ़े तीन फुट की रही होगी, मैंने उसे धो-पोंछकर अपना 'घर' बनाया था और उस परछत्ती के साथ जो कुछ हाथ खुली जगह थी, वहाँ दो टूटी हुई हँड़ियाँ रखकर, उनमें मिट्टी भरकर, चंपा के पौधे लगा लिए थे । मुझे तब पढ़ना भी नहीं आता था, पर एक सुंदर-सी जिल्दवाली 'पंज ग्रंथी' लेकर मैंने 'घर' में सजा

परिचय

जन्म : १९१९, गुजरांवाला (पंजाब)
मृत्यु : २००५, (नई दिल्ली)
परिचय : अमृता प्रीतम पंजाबी की प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । आपने पंजाबी तथा हिंदी में प्रचुर लेखन किया है। इनमें उपन्यास, आत्मकथा, संस्मरण, कहानियाँ, कविताएँ आदि शामिल हैं । आपका लेखन पाठक की संवेदना को झकझोरकर रख देता है । आपको ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है।
प्रमुख कृतियाँ : 'पिंजर', 'कोरे कागज', 'सागर और सीपियाँ' (उपन्यास), 'रसीदी टिकट' (आत्मकथा), 'कच्चा आँगन', 'एक थी सारा' (संस्मरण), 'हीरे दी कनी', 'इक शहर दी मौत', 'तीसरी औरत' (कहानी संग्रह) आदि हिंदी में अनूदित ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में अमृता प्रीतम जी ने चित्रकार शोभा सिंह से उनके अनुभव, चित्रकला चुनने के कारण, चित्रकला के विषय आदि पर प्रश्न किए हैं । शोभा सिंह ने इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दिए हैं।

ली थी। उसके लिए एक चँवर भी ढूँढ़ लिया था जो दीमक का खाया हुआ था । साथ ही साढ़े तीन फुट की परछत्ती की दीवारों पर, जो भी कागजों की तस्वीरें मिली थीं, लगा ली थीं और 'घर' सजा लिया था । वह घर कभी न बना और मैं खयाली घर की दीवारें सजाने के लिए तस्वीरें बनाने लगा ।

अमृता प्रीतम : आप औरत को औरत के तौर पर महत्त्व नहीं देते? केवल माँ के तौर पर महत्त्व देते हैं?

शोभा सिंह : मैं रचनात्मक शक्ति के संबंध में कह रहा हूँ । जैसे अमृता का महत्त्व उसके लेखिका होने के कारण है, शोभा सिंह का चित्रकार होने के कारण, उसी तरह औरत का महत्त्व उसके माँ होने के कारण है । उसकी रचनात्मक शक्ति उसके माँ होने में है। अपने अस्तित्व की धरती में वह एक बीज को धारण करने के लिए माँ-बाप, बहन-भाई, घर-सहेलियाँ, सब कुछ छोड़कर वह एक नई और ऊपरी धरती पर चली जाती है, यह कितनी बड़ी साधना है । यही उसकी कला है, उसकी दैवी शक्ति, उसका ज्ञान, इसी जगह वह 'जीनियस' है ।

अमृता प्रीतम : कलाकार का कर्म समूची दुनिया के होने में कोई फर्क डाल सकता है?

शोभा सिंह : मैं एक सच्चे कलाकार का कर्म एक छोटी-सी जलती हुई मोमबत्ती समझता हूँ, जो दूर तक उजाला नहीं कर सकती, पर अपने इर्द-गिर्द, दो-चार हाथ धरती को जरूर चाँदना दे सकती है । यही दो-दो, चार-चार हाथ का चाँदना पूरी सभ्यता को प्रभावित कर सकता है ।

अमृता प्रीतम : हमारी धरती का यथार्थ बहुत भयानक है, क्या आप कभी वह यथार्थ चित्रित करना चाहेंगे ?

शोभा सिंह : नहीं । वह यथार्थ जगह-जगह पर, सड़कों की पटरियों पर भी चित्रित हुआ पड़ा है । भयानक गरीबी और अंतहीन दुखों का इतिहास । उसे मैं दोबारा कागजों पर क्यों चित्रित करूँ? जिंदगी की खूबसूरती और जिंदगी की अच्छाई जो दिनोंदिन लोप होती जा रही है, मैं उसे कागज पर चित्रित करना चाहता हूँ, ताकि वह मिटते-मिटते कभी हमारी कल्पना से भी न मिट जाए । विलियम ब्लेक की एक पंक्ति है कि 'सुंदर ईश्वर को गुलाब का एक फूल बनाने

श्रवणीय

आपको देशभक्ति पर आधारित गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत करना है । इसकी रूपरेखा बनाने हेतु रेडियो पर गीतों का कोई कार्यक्रम सुनिए ।

लेखनीय

'रंगों का जीवन में बड़ा महत्त्व है' उदाहरण सहित स्पष्ट लिखिए ।

में पचास हजार बरस लगे थे ।' अगर हम 'स्वयं' को बड़ा कर लें तो जो कुछ दुनिया में से खोता जा रहा है, वह किसी हद तक खो जाने से बच जाए। गुरुओं के चित्र भी मैं इसीलिए बनाता हूँ क्योंकि उनके 'स्वयं' महान थे । अगर कभी कोई गुरु के हाथ से या किसी महान व्यक्तित्व के हाथ से अमृत छक लेता था-वह सचमुच एक शक्ति को धारण कर लेता था । यह केवल एक भोले इन्सान का विश्वास नहीं था जो उसे शक्ति देता था, यह उस व्यक्तित्व का प्रभाव था जिसके हाथ से वह शक्ति ग्रहण करता था । कलाकार का कर्म भी एक व्यक्तित्व बनना है, तभी कला में उसका प्रभाव आ सकता है । कला जब कला के लिए होती है तब उसका कोई प्रभाव नहीं होता ।

अमृता प्रीतम : सो कलाकार की शक्ति उसके चिंतन में है, और चिंतन के अमल में । इसमें आप दर्शक का कर्म क्या समझते हैं?

शोभा सिंह : कई दर्शक ऐसे भी होते हैं, जो बगल में लगे हुए चित्र को देखने के लिए पूरी तरह गरदन भी नहीं घुमाते या सरसरी नजर से सब चित्रों को देखकर पूछेंगे-बस..., और तस्वीरें नहीं हैं ? पर कलाकार का कर्म किसी हद तक दर्शक को वह आँख देना भी है - जिससे वह देख-समझ सके । कुछ दिन हुए एक अमीर-सी औरत आई । बड़े आदर से चित्रों को देखती रही, बैठी रही, फिर बोली, ''आपने मुझे प्रसाद नहीं दिया ।'' मैंने पूछा, ''आपने इतनी देर इस पहाड़ी हवा में साँस ली-फिर क्या यह सुख प्रसाद नहीं है ? क्या प्रसाद सिर्फ बूँदी होता है ?'' यही सोच और सूझ होती है जिसे कलाकार को अपने दर्शक को देना होता है ।

('शौक सुराही' से)

— ० —

पठनीय

'कला अभिव्यक्ति का माध्यम है' अंतरजाल की सहायता से इसकी जानकारी इकट्ठा कर पढ़िए ।

संभाषणीय

'कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में बिताए हुए समय' का अपना अनुभव अपने मित्रों को बताइए ।

शब्द संसार

चाँदना पुं.सं.(हिं.) = प्रकाश, उजाला, चाँदनी
परछत्ती स्त्री.सं.(हि.)= घास-फूस का बना छप्पर
यथार्थ पुं.सं.(सं.)= सत्य

मुहावरा

भुलावा हो जाना = भ्रम हो जाना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) विधानों के सामने सही अथवा गलत लिखिए :

१. शोभा सिंह ने 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' का क्रम बदला है । ☐
२. प्रश्नकर्ता के अनुसार हमारी धरती का यथार्थ बहुत भयानक नहीं है । ☐
३. कलाकार की शक्ति उसके चिंतन में है । ☐
४. शोभा सिंह कलाकार का कर्म एक छोटी-सी जलती हुई मोमबत्ती नहीं समझते । ☐

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

माँ का महत्त्व

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
चित्रकार	-------	माँ
लेखक	-------	शोभा सिंह
ईश्वर	-------	अमृता प्रीतम
जीनियस	-------	बेगाना पुत्र
		कलाकार

(४) उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

१. सुंदरता के लिए ------- सबसे पहली अवस्था है ।(नजर, दृष्टि, नजरिया)
२. हमारी धरती का ------- बहुत भयानक है ।(सत्य, यथार्थ, वास्तव)
३. कलाकार की शक्ति उसके ------- में है ।(चिंतन, मनन, साधना)
४. मैं रचनात्मक ------- के संबंध में कह रहा हूँ । (युक्ति, कृति, शक्ति)

(५) पाठ में प्रयुक्त ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता ।

जैसे : वृक्ष = वृक्ष

______, ______, ______, ______,
______, ______, ______, ______,

अभिव्यक्ति 'कला जीवन को आनंदित करने का साधन है,' विषय पर अपना मत स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

वर्तनी के नियमों के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए :

- मुश्कील/मुशकील/मुश्किल/मुष्कील = ______
- परसिद्‌ध/प्रसिद्‌ध/प्रसीध्द/प्रसिध्ध = ______
- मिट्‌टी/मिट्‌यी/मिठ्‌टी/मीट्‌ठी = ______
- रूतूएँ/ऋतुएँ/ऋतूए/ऋतूयें = ______

CVY9I5

उपयोजित लेखन 'पुस्तक मेले में दो घंटे' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।